भारतीय तटरक्षक

सत्यमेव जयते

वयम् रक्षामः

पूर्वी सीमा

हिन्दी पखवाड़ा 2025 समापन समारोह के उपलक्ष्य में
तटरक्षक कमांडर महोदय एवं विजेताओं के साथ

निज भाषा उन्नति आहे, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा – ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल॥

... भारतेन्दु हरिश्चंद्र

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय – वस्तु	पृ.संख्या
1.	अपर महानिदेशक संदेश	
2.	स्टाफ प्रमुख संदेश	
3.	रचनाएँ	1
4.	सफर, साया और सवेरा	2
5.	हिन्दी है एक अद्भुत रचना	3
6.	तट के प्रहरी, देश के रक्षक, आओ मिलकर संकल्प लें	
7.	सीख	4
8.	शहीद की माँ	
9.	वरना बहुत पछताएगा	5
10.	नाविक और लहरों की बात	6
11.	उम्र चालीस	7
12.	खुश रहें और मुस्कुराएँ	8
13.	हिन्दी हमारी पहचान और शक्ति	9
14.	सहयोग की शक्ति	10
15.	राजभाषा गतिविधियाँ	11-17

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351

तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,

केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि

अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से,

अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से,

प्रशिक्षण और पुरस्कार से,

अपने साथियों में राजभाषा प्रेम कि ज्योति जलाए रखेंगे,

उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे,

अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए,

अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल

और प्रभावशाली बनाते हुए,

राजभाषा – हिन्दी का प्रयोग,

प्रचार और प्रसार बढाएंगे ।

हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति

सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा ! जय हिंद ! जय हिन्दी !

संपादक मंडल

उप महानिरीक्षक अनिल कुमार परियाल, त.प.
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का.व. प्र.)

उप महानिरीक्षक मनीष वर्मा
मुख्य स्टाफ अधिकारी (तकनीकी)

श्रीमती स्मिता पटनाक सुतार
निदेशक (बजट / असैनिक)

समादेशक (जे जी) रितिका चौधरी
स्टाफ अधिकारी(संक्रिय)

विजय कुमार यादव,
प्रधान अधिकारी (एम ई)
तकनीकी अनुभाग

श्रीमती हरिणी,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक

मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र
पोस्ट बॉक्स सं. 7335
मल्कापूरम पोस्ट
विशाखापट्टणम - 11

हम हिन्दी में काम करें,

हिन्दी पर अभिमान करें।

अपर महानिदेशक डॉनी माइकल, प.त.प., त.प. (शौर्य)
तटरक्षक कमांडर,
मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूती हो रही है कि इस वर्ष हिन्दी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर इस मुख्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका "पूर्वी सीमा" का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

मुझे इस पत्रिका में अपने विचारों को व्यक्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। पत्रिकाएं निरंतर संवाद के लिए एक मंच प्रदान करती हैं, जो कार्मिकों के लिए सहज – सुलभ और उन्हे कार्यालयीन परिवेश में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का माध्यम उपलब्ध कराती है । राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से इस पत्रिका में मुख्यालय के राजभाषा की विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियों को दर्शाया गया है।

मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र द्वारा गृह पत्रिका "पूर्वी सीमा" के प्रथम अंक का विमोचन किया जा रहा है, जो कार्यालय की सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाने के लिए सार्थक मंच प्रदान करता है और विश्वास रखते है कि हम सभी परस्पर सहयोग और एक सुनियोजित योजना के तहत कार्य करते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ...

डॉनी माइकल

(डॉनी माइकल)
अपर महानिदेशक
तटरक्षक कमांडर
मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र

हिंदी हमारी संस्कृति,

सभ्यता और एकता की सशक्त पहचान है।

महानिरीक्षक योगेन्द्र ढाका, त.प.
स्टाफ प्रमुख
मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र

संदेश

प्रिय साथियों,

मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र, विशाखापटटणम की गृह पत्रिका "पूर्वी सीमा" के माध्यम से पहली बार आप लोगों के साथ जुडते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। गृह पत्रिकाएं किसी भी कार्यालय के कार्यकलापों का दर्पण होती हैं। राजभाषा पत्रिका को प्रकाशित करने की मूल भावना, दैनिक कार्यालयीन कार्य को हिन्दी में करने की सोच को विकसित करना है।

मुझे आशा है कि पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक कार्मिक राजभाषा से जुड़े पहलुओं को पढ़कर हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे। हिन्दी मात्र एक भाषा ही नहीं, हमारी संस्कृति की परिचायक भी है। हिन्दी, भारत की राजभाषा के साथ – साथ संपर्क भाषा के रूप में निरंतर अपना प्रभाव बढ़ाती जा रही है। राजभाषा के संदर्भ में हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में निरंतर प्रयासरत् रहेंगे ।

इसी संदर्भ में, मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अग्रिम बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका हेतु अपनी रचनाएं अग्रेषित की हैं। आशा है कि भविष्य में पत्रिका और भी अनेक अंक में हमारे समक्ष आएगी। "पूर्वी सीमा" के प्रथम अंक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगेन्द्र ढाका)
स्टाफ प्रमुख
मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र

सागर में मिलती धाराएं, हिन्दी सबकी संगम है।
सबको साथ लेकर जो चले, हिन्दी ऐसी अनुपम है।
न किसी भाषा से द्वेष, न श्रेष्ठता का दंभ।
शब्द, नाद, लिपि से भी आगे, एक भरोसा अनुपम है।
गंगा – कावेरी की धारा, साथ मिलाती हिन्दी है।
पूरब – पश्चिम, उत्तर – दक्षिण सेतु बनाती हिन्दी है।

जय हिंद, जय हिन्दी ॥

रचनाएँ

सफर, साया और सव़ेरा

जीवन है एक रस्ता लंबा,
हर मोड़ पे मिलती नई तरंगा।
कभी धूप में तपती आशाएं,
कभी छाव में पलती व्यथाएँ ।

कभी चला अकेला मनमौजी,
कभी साथ तेरे सब कुछ सजी।
तेरी मुस्कान बनी थी राहें,
तेरी बातों में थी राहतें बाँहें।

प्रेम की वो पहली बौछारें,
जैसे सूनी रूह में फुहारें।
तेरी आंखों में झीलें देखीं,
तेरे शब्दों में कविता लेखीं।

कंधे से कंधा जब तू चला,
हर रास्ता फूलों से भरा।
मंजिलें तब दूर नहीं लगीं,
ख्वाब जैसे सच में ढल चलीं ।

फिर आए कुछ राह के पत्थर,
बिछुड़ गए हम कुछ पल तन्हा कर।
पर मन का राही फिर बढ़ा,
दर्द भी था, पर हौसला भी बड़ा।

घूमे हैं हम जंगल, समंदर,
नजरों में बसे हर इक मंजर ।
हर शहर ने कुछ सिखाया,
हर सफर ने खुद से मिलवाया।

जीवन की गाड़ी रुकती नहीं,
हर दिन एक नई कहानी कहती ।
प्रेम हो, या हो विरह की बात,
हर मोड़ पे मिलते हैं जज़्बात।

अब चलें फिर एक नई दिशा में,
तेरे हाथ को थामे हवा में।
जीवन, प्रेम और सफर का संग,
इन्हीं में बसीं है सच्ची उमंग।

स्मिता पटनायक सुतार
निदेशक (बजट / असैनिक)

हिन्दी है एक अद्भुत रचना

हिन्दी है एक अद्भुत रचना,
हर दिल में बसी एक भावना।
न केवल भाषा, यह है संस्कार,
हर कदम में बसी है इसकी बहार।

ग्रामों से लेकर नगरों तक,
हर जुबां पर इसका वास है।
व्यवहार में, दृष्टिकोण में,
हिन्दी का अद्भुत ताज है।

न कोई सीमाएं, न कोई बंधन,
यह एक सागर है, सबको अपनाता।
कामकाजी दुनिया में इसे समेटो,
यह जीवन को सुखमय बनाता।

"जहां हिन्दी है, वहां पहचान है;
जहां हिन्दी है , वहां सम्मान है।
यह है हमारी भाषा, यह है हमारा आधार।

जितेंद्र सिंह, त.प.
अधिकारी
06303 – जेड
स्टाफ प्रमुख सचिवालय

तट के प्रहरी, देश के रक्षक, आओ मिलकर संकल्प लें

तट के प्रहरी, देश के रक्षक,
नभ से जल तक चौकस नजर,
सीमा पर तैनात जो रहते,
वे हैं भारत के सच्चे वीर,
भारत माँ का मान बढ़ाएं,
तट सुरक्षा में रंग जमाएँ।

हिन्दी और सेवा का मेल,
राष्ट्रभक्ति का यहीं है खेल,
हिन्दी पखवाड़ा जब आता,
भारतीय तटरक्षक भी गौरव पाता
आओ मिलकर संकल्प लें,
हिन्दी को ऊँचाई दें।

अनूप शर्मा,
प्रधान नाविक (आर पी)
06847-क्यू
संक्रिय विभाग

सीख

दर्द कागज पर मेरा बिकता रहा,
मैं बेचैन था, रात भर लिखता रहा
छू रहे थे सब बुलंदियाँ आसमान की,
मैं सितारों के बीच चाँद की तरह छिपता रहा,
अकड़ होती तो कब टूट गया होता,
मैं नाजुक सबके आगे मुस्कुराता रहा,
जिनको जल्दी थी वो बढ़ चले मंजिल की ओर,
मैं समुंदर से राज गहराई का सीखता रहा

एल बी सिंह
उत्तम अधिकारी
04395-आर
तटरक्षक कमांडर सचिवालय

शहीद की माँ

कर गयी पैदा तुझे उस कोख का एहसान है,
सैनिकों के रक्त से आबाद हिंदुस्तान है।
तिलक किया मस्तक चूमा बोली ये ले कफन तुम्हारा,
मै मां हूँ पर बाद में, पहले बेटा वतन तुम्हारा।
धन्य है मैया तुम्हारी भेंट में बलिदान में,
झुक गया है देश उसके दूध के सम्मान में।
दे दिया है लाल जिसने पुत्र मोह छोड़कर,
चाहता हूँ आंसुओं से पांव वो पखार दूं
ए शहीद की माँ, आ तेरी मै आरती उतार लूँ।

आर एस नेगी
प्रधान अधिकारी
02102-एच
कार्मिक व प्रशासन विभाग

वरना बहुत पछतायेगा

कलयुग के इस युग में साथी
साथ नहीं कोई देता है,
साथ निभाने के बदले
कोई भी पैसे लेता है।
फौज के जैसे साथी प्यारे
कहीं नहीं तू पायेगा।
छोड़ दे जिद पेंशन जाने की
वरना बहुत पछतायेगा।
आज तू नाविक है रुक जा प्यारे
अधिकारी भी बन जाएगा।
धीरज़ रख तू थोड़ा साथी
जो चाहेगा पाएगा।
लगा के मन कर देश की सेवा
प्रधान अधिकारी भी कहलायेगा।
छोड़ दे जिद्द पेंशन जाने की
वरना बहुत पछतायेगा।
कृपया पेंशन आने कि जल्द बाजी ना करे

विजय कुमार यादव
प्रधान अधिकारी (एम ई)
02054-टी
तकनीकी विभाग

नाविक और लहरों की बात

समुद्र की गोद में, गहराइयाँ थी सोई,
नीली लहरों में जैसे, कोई कहानी खोई थी।
नाविक चला अकेला, पतवार लिए हाथ,
सपनों का साहस था, और दिल में थी बात।

लहरें थी बेचैन, छूना चाहें आसमान,
हर एक उत्थान में छिपा, कोई अनजाना सा गान।
नाविक हँसा धीरे, बोला – "डरती क्यों हो मुझसे?
मैं भी भटका हुआ राही हूं, अपनी ही तलाश में।"

कभी लहरें थपेडों में, उसे गिरा देती थीं,
कभी अपने प्यार से, उसे गले लगाती थीं।
समुद्र भी मौन खड़ा था, साक्षी बन इस खेल का,
जहां नाविक, लहरें, और तूफान – सभी हिस्सा थे मेल का।

न दिन का था, न रात का था डर, बस आगे बढ़ना था,
हर मोड़ पे एक सबक, हर तूफान से लड़ना था।
नाविक ने सीखा – लहरें रोकती नहीं राह,
बल्कि चलना सिखाती हैं, जब तक जाए चाह।

नवीन कुमार
अधिकारी (ए ई)
06206 – एल
विमानन अनुभाग

उम्र चालीस

ये उम्र चालीस की बड़ी अज़ीब होती है।
ना बीस का जोश,
ना साठ की समझ,
ये हर तरह से गरीब होती है।
ये उम्र चालीस की बडी अज़ीब होती है।

सफेदी बालों से झांकने लगती है,
तेज दौड़े तो सांस फुलने लगती है।
टूटे ख्वाब, अधूरी ख़्वाइशों,
सब मुंह तुम्हारा ताकने लगती है।
खुशी इस बात की होती है
की ये उम्र प्राय: सबको नसीब होती है।
ये उम्र चालीस की बड़ी अज़ीब होती है!

ना कोई हसीना मुस्कुरा के देखती है,
ना ही नजरों के तीर फेंकती है!
और आँखे लड़ भी जाये नसीब से,
तो ये उम्र तुम्हें दायरे में रखती है।
कदर नहीं थी जिसकी जवानी में,
वो सेहत अब बड़ी करीब होती है।
ये उम्र चालीस की बडी अज़ीब होती है।

वैसे, नजरिया बदलो तो
शुरू से , शुरुआत हो सकती है।
आधी तो गुजर गयी,
आधी बेहतर गुजर सकती है।
थोड़ा बालों को काला और दिल को हरा कर लो,
अधूरी ख्वाइशों से कोई समझौता कर लो।

ज़िंदगी तो चलेगी अपनी रफ्तार से ही,
तुम बस अपनी रफ्तार काबू कर लो।
फिर देखो ये कितनी खुशनसीब होती है,
ये उम्र चालीस की बडी अज़ीब होती है।

पुण्यदेव साहनी
उत्तम अधिकारी (पी)
04699-एल
सूचना प्रोद्योगिकी अनुभाग

खुश रहें और मुस्कुराएं

जो तुम्हारे पास बचा है वह समाप्त हो जाएगा,
जन्म और मृत्यु का चक्र चलता रहता है।
जब तक तुम जीने के कारण खोजते हो,
तब तक रुको मुझे मुस्कुराने दो।
प्रकृति तुम्हारे लिए जीना चाहता है,
सूरज तुम्हारे लिए जीना चाहता है।
बारिश तुम्हारे लिए गिरना चाहती है,
बादल तुम्हारे लिए बरसना चाहते है।
चाँद अपनी चाँदनी के साथ इंतजार कर रहा है,
यह एक कृत्रिम मुस्कान से सुंदर है।
लेकिन जब तक तुम जीने के कारण खोजते हो,
तब तक रुको मुझे मुस्कुराने दो ।
कवि कविताएं दिखाने के लिए इंतजार कर रहे हैं,
फूलों और आकाश का क्या।
अधिक की तलाश में हम में से एक हूँ।
लेकिन आप मुस्कुराने के कारणों की तलाश करते हैं,
इसलिए खुश रहें और मुस्कुराएं।

बचन दास
प्रधान अधिकारी
03973-एल
संरचना एवं कार्य अनुभाग

“ हिन्दी : हमारी पहचान और शक्ति ”

आज के दौर में जहां डिजिटल दुनिया में अंग्रेजी का बोलबाला है, वहीं हिन्दी भाषा की महत्वता को नजरअंदाज़ नहीं किया जा सकता। हिन्दी केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि यह हमारी पहचान, संस्कृति और भावनावों का संगम है। जब हम हिन्दी में अपने विचार व्यक्त करते है, तो यह न केवल हमारी भाषा की समृद्धि को प्रदर्शित करता है, बल्कि हमारे भीतर की गहरी संवेदनाओं और विचारों को भी उजागर करता है।

किसी भी कार्यक्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग करने से न केवल हम अपनी मातृभाषा का सम्मान करते है, बल्कि हम अपने समाज के साथ जुड़ाव भी महसूस करते है। हिन्दी में सोचने और कार्य करने से न केवल मानसिक स्पष्टता मिलती है, बल्कि यह हमारी कार्यशक्ति को भी बढ़ाती है। अत: हर कार्यस्थल में हिन्दी को प्रोत्साहित करना न केवल एक सम्मानजनक कदम है, बल्कि यह सामाजिक समृद्धि और देश की एकता को भी मजबूत बनाता है।

जितेंद्र सिंह, त.प.
अधिकारी
06303-जेड
स्टाफ प्रमुख सचिवालय

सहयोग की शक्ति

अच्छे कार्य में सहयोग देना हर मानव का फर्ज है। सहयोग का फल अन्ततः लौटकर हमारे पास ही आता है,यह अकाट्य सिद्धांत है। यदि हम जरूरत के समय एक-दो की सहायता नहीं करते, संगठित नहीं होते तो कितने भयंकर परिणाम सामने आ सकते हैं, इस बात को समझाने के लिए एक छोटी कहानी इस प्रकार है –

एक बार एक किसान के बड़े और खुले आंगन में एक बकरा बंधा रहता था और एक मुर्गा, एक कबूतर और एक चूहा – ये तीनों भी वहाँ आजादी से घूमते थे। चारों में अच्छी मित्रता थी। एक दिन चूहे ने देखा कि घर का मालिक बाजार से कुछ सा मान खरीद कर लाया है। वह उत्सुकतावश उस सामान के आस-पास चक्कर लगाते-लगाते देखता है कि उसमें एक चूहेदानी भी है। वह भयभीत होकर अपने मित्र कबूतर को बताता है की मेरे पर मुसीबत आई है, मुझे फँसा कर मारने की योजना है, मेरी रक्षा का कोई उपाय करो। कबूतर ने बड़ी बेरुखी से उत्तर दिया, तेरी मुसीबत, तुम जानो, मै क्या कर सकता हूँ। असहाय चूहा भयभीत होकर फिर सहयोग की आशा से मुर्गे के पास गया। मुर्गे से भी वही उत्तर मिला। अंत मे वह बकरे के पास गया पर उसने भी उसे निराश ही किया। कोई रास्ता न देख अपने जीवन की रक्षा के लिए चूहा चुपचाप घर छोड़कर जंगल की ओर दोड़ गया।

घर के मालिक उसी रात में पींजरा लगा दिया। चूहा तो था नहीं पर एक साँप उसमे फँस गया। सुबह घर की मालकिन ने पिंजरे के बाहर निकली हुई साँप की पूँछ देखी और गलती से उसे चूहे की पूँछ समझ खुश हो गई कि अच्छा हुआ, पहले दिन ही सफलता हाथ लग गई। जैसे ही वह पिंजरे के नजदीक गई, उसका हाथ उस पूँछ को छू गया और साँप ने उसे काट लिया। घर के मालिक ने मालकिन का इलाज करवाया। इलाज के लिये सबसे पहले कबूतर के शरीर को मारकर मालकिन को परोसा गया। फिर मुर्गे की बारी आई। यह सब करने पर भी मालकिन बच नहीं पाई और उसकी तेरहवीं पर बकरे की भी बलि चढ़ गई। इस प्रकार समय पर एक मित्र को सहयोग न देने से क्रमवार तीनों का ही अन्त हो गया।

कहानी हमें यही शिक्षा देती है कि हम सभी मानव सह-जीवी हैं। एक-दो के सहयोग से सुखमय जीवन जी सकते हैं, सुरक्षित रह सकते हैं और अपनी शक्तियों को कई गुणा बढ़ा सकते हैं। इसलिए कहावत बनी, एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं और यदि बीच में परमपिता परमात्मा शिव को रख लिया जाए तो एक और एक, एक सौ एक (101) भी हो सकते हैं।

अशोक कुमार पांडे
पी एस ई (ई आर)
07800 – एच
तटरक्षक कार्य कौशल दल (पूर्व)

राजभाषा गतिविधियाँ

राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन – विशेष उपलब्धियॉ

राजभाषा संबंधी सांविधानिक उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र निरंतर प्रयासरत है। यह मुख्यालय 2017 से सक्रिय रुप से स्थापित किया गया है और भारतीय तटरक्षक के पूर्वी क्षेत्र में संचालनकर्ता कार्यालय के रुप में मुख्यालय का कार्यक्षेत्र काफी विशाल है। मुख्यालय द्वारा अधीनस्थ क्षेत्रीय मुख्यालयों/इकाईयों/पोतों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों का अनुवीक्षण करके कमियॉ दूर करने के लिए इस मुख्यालय द्वारा आवश्यक सुझाव दिया जाता हैं। मुख्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अन्य उपलब्धियॉ इस प्रकार हैः-

भाषा प्रशिक्षण :- हिन्दी भाषा का ज्ञान राजभाषा के कार्यान्वयन का आधार है। 'ग' क्षेत्र स्थित कार्यालय होने पर, हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रशिक्षण दिए जाने संबंधी सख्त कारवाई की गई है। हिन्दी शिक्षण योजना, कार्यालय, विशाखापट्टणम के हिन्दी प्राध्यापक द्वारा मुख्यालय में हिन्दी प्रशिक्षण वर्ष 2022 (जुलाई – नवंबर) सत्र से शुरू किया गया है। हिन्दी प्रशिक्षण के लिए मुख्यालय एवं विशाखापट्टणम स्थित इकाईयों, जिला मुख्यालय सं.06 और अन्य अधीनस्थ इकाईयों एवं पोतों से पिछ्ले चार वर्ष के अंतराल में कुल 21 अधिकारियों एवं 67 कर्मचारियों को हिन्दी भाषा प्रशिक्षण के अंतर्गत हिन्दी प्रबोध, प्रवीण, पारंगत पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण प्राप्त किए। गत वर्ष की भांति चलू वर्ष सत्र II हिन्दी प्रशिक्षण की कक्षाएँ, इस मुख्यालय में चलाई जा रही है।

मुख्यालय में हिन्दी प्रशिक्षण का कार्यान्वयन – विशेष उपलब्धियाँ

मुख्यालय में हिन्दी प्रशिक्षण का कार्यान्वयन – विशेष उपलब्धियाँ

हिन्दी तिमाही बैठकों का आयोजन

हिन्दी प्रोत्साहन योजनाओं कार्यान्वयन के अंतर्गत विजेताओं को पुरस्कार वितरण

एक द्विवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन – विशेष उपलब्धियाँ

हिन्दी पखवाड़ा 2024 समापन समारोह के उपलक्ष्य में
स्टाफ प्रमुख महोदय द्वारा अभिभाषण

हिन्दी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में कार्यालयीन शब्दावली का विमोचन

नराकास द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में असाधारण प्रयास के लिए **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति विशाखापट्टणम** द्वारा **मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र** को वर्ष 2024-25 के लिए 'प्रशस्ति पत्र' से अलंकृत किया गया है। दिनांक 22 मई 25 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, विशाखापट्टणम की 79वीं बैठक में मंडल रेल प्रबंधक महोदय से 'प्रशस्ति पत्र' प्रदान किया गया है।

राजभाषा कार्यान्वयन हेतु जाँच बिंदु

- हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्यत: हिंदी में देना ।
- वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार मूल पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करें ।
- धारा 3(3) के अंतर्गत आनेवाले सभी दस्तावेजों को अनिवार्यत: द्विभाषी में जारी करें।
- कार्यालय की वेबसाइट को द्विभाषी रूप में तैयार करें।
- सभी कंप्यूटरों पर यूनिकोड सक्रिय करें।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन कर प्रत्येक तिमाही में इसकी बैठक का आयोजन करें।
- प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करें।
- कार्यालय में प्रयुक्त सभी फॉर्म/ नामपट्ट/सूचना पट्ट /रजिस्टर तथा फाईल के शीर्षक द्विभाषी रूप में करें।
- कार्यालय में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों को छोड़कर अन्य कर्मचारियों को हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत भाषा (प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत) प्रशिक्षण दिया जाना हैं। साथ ही संबंधित कर्मचारियों को हिन्दी टंकण / हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए नामित करें।
- कार्यालय के अनुभागों / अधीनस्थ कार्यालयों का समय – समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण करें।
- कार्यालय का ऑनलाइन पंजीकरण करते हुए तिमाही प्रगति रिपोर्ट को हर तिमाही में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को भेजें।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालय प्रमुखों का उपस्थित होना सुनश्चित करें।
- सेवा पंजियों में प्रविष्टियों द्विभाषी रूप में करें।
- कार्यालय में हिन्दी दिवस / हिन्दी सप्ताह/ हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन करें।
- कार्यालय में हिन्दी में काम करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए राजभाषा विभाग द्वारा घोषित हिन्दी प्रोत्साहन योजनाएं लागू करें ।

पूर्वी सीमा

मुख्यालय तटरक्षक पूर्वी समुद्री सीमाक्षेत्र